उज्जैन पत्रिका SUNDAY
पत्रिका . उज्जैन, रविवार, 28 मई, 2023

मनोस्थिति बिगड़ने पर घर से चला गया था युवक

एक साल पहले लापता युवक को मुंबई की 'श्रद्धा' ने लौटाया तो महिलाओं ने ली बलाइयां

मुंबई की संस्था ने इलाज कर घर पहुंचाया, परिवार की खशियों का नहीं रहा ठिकाना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नागदा. करीब एक साल पहले घर से लापता युवक वापस परिजनों के पास पहुंचा, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मानवता का यह कार्य मुंबई की श्रद्धा रिहेबिलिटेशन फाउंडेशन ने किया है। फाउंडेशन के लोगों को युवक मुंबई की सड़कों पर मिला तो उसकी दिमागी हालत ठीक नहीं थी। फाउंडेशन ने इलाज कर युवक के गांव, घर का पता पूछा। इंटरनेट की मदद से गांव का नाम खोजा। पुख्ता जानकारी के बाद फाउंडेशन के लोग उसे लेकर गांव पहुंचे। एक साल बाद जब युवक अपनों से मिला तो परिजन, रिश्तेदारों, गांववालों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सभी ने युवक का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया। खासकर महिलाओं ने बलाइयां ली। समीपस्थ ग्राम डाबरी निवासी कमल गुर्जर मानसिक रूप से कमजोर है।

गांव पहुंचने पर कमल व उन्हें घर पहुंचाने वाले राकेश कुमावत का सम्मान किया गया।

करीब एक साल पहले कमल घर से निकल गया और भटकते-भटकते मुंबई जा पहुंचा। मुंबई की सड़कों पर कमल को घूमता देख एक स्वयं सेवी संस्था ने उसे श्रद्धा फाउंडेशन के सुपुर्द किया। फाउंडेशन ने कमल को अपने आश्रम में रखकर इलाज दिया। इलाज के चलते कमल धीरे-धीरे ठीक होने लगा। करीब छह महीने पहले समिति ने कमल से इसके घर का पता जानने की कोशिश की। कमल ने अपने गांव का नाम बताकर घर जाने की इच्छ जताई। फाउंडेशन ने गूगल से कमल के गांव का पता ढूंढ़ निकाला। शुक्रवार सुबह फाउंडेशन के राकेश कुमावत कमल को लेकर गांव पहुंचे। कमल के गांव पहुंचने पर उसका व कुमावत क स्वागत किया गया।

बिरलाग्राम व नागदा थाने में दर्ज कराई थी गुमशुदगी

सरपंच निलेश गुर्जर ने बताया कि कमल के गुम होने पर उसके नाम की गुमशुदगी बिरलाग्राम व मंडी थाने में दर्ज कराई थी। लंबे समय तक कमल का पता नहीं चलने पर सभी उसके मिलने की आस छोड़ चुके थे। परिजनों ने कमल के लिए मन्नत भी मांगी थी, जो अब पूरी हो चुकी है।

अब तक 7 हजार भटकों को दिखाया घर का रास्ता

फाउंडेशन के कुमावत ने बताया कि कमल को अगले एक साल तक की दवाइयां नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। वर्ष 1991 से संस्था मुंबई में मनोरोगियों के लिए काम कर रही है। संस्था अब तक 7 हजार से अधिक मनोरोगियों को ठीक कर उन्हें उनके परिजनों से मिलवा चुकी है।